जिसे पूजा, वही हुए धरा पर अवतरित

ईश्वर हमपर मेहरबान हो, तभी तो हम उसकी बंदगी करते आये अभी तक। हमें ये कहते हुए बहुत अच्छा महसूस होता कि वही ईश्वर अब अपने भक्तों को या यूं कहें कि अपने बच्चों को उनकी पूजा, भक्ति, बंदगी का फल देने हेतु इस धरा पर धरती के एक अतिश्रेष्ठ मानव के तन से अपना दर्शन करा हमको दर्शनीय मूर्त बनाने के लिए आ चुके हैं। बस इंतज़ार है तो आपके पहचानने की उस भोलेनाथ को...!!!

कर्म-बन्धन के कारण गर्भ से उत्पन्न होने पर आत्माएं जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाती हैं। लेकिन परमात्मा का आवागमन नहीं होता। वह पुनर्जन्म के चक्र से परे है। कर्मातीत होने के कारण परमात्मा किसी के गर्भ में नहीं आता। कोई माँ उस सर्वशक्तिमान् को अपने गर्भ में धारण नहीं कर सकती। जगत्-पिता का कोई पिता नहीं हो सकता। परमात्मा शिव स्वयंभू हैं। सर्व-आत्माओं के कल्याणार्थ वे अवतरित होते हैं अर्थात् परकाया प्रवेश करते हैं। वे योग-बल से प्रकृति को वश में कर एक मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं और उसके मुख द्वारा सर्व जीवात्माओं को प्राय: लुप्त गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर अधर्म का विनाश तथा सत्-धर्म की पुनर्स्थापना कराते हैं। भारतवर्ष में योगियों के परकाया प्रवेश की बात तो सर्व-विदित है। फिर परमात्मा शिव तो योगियों के भी ईश्वर हैं।

परमात्मा का अवतरण ज्ञान-योग की शिक्षा देकर जीवात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता है। यदि वे गर्भ से जन्म लें तो गर्भ का समय और बाल्यावस्था का समय व्यर्थ चला जाये। युवावस्था भी बुज़ुर्गों को शिक्षा देने के लिए उपयुक्त नहीं है। आध्यात्मिक शिक्षा तो वानप्रस्थ अवस्था में ही प्रभावोत्पादक ढंग से दी जा सकती है, जब मनुष्य अनुभव-सम्पन्न हो जाता है। गर्भ से जन्म लेने पर परमात्मा को ज्ञान देने के पूर्व पचास वर्ष शरीर को परिपक्व बनने की प्रतीक्षा में लगाना पड़ेगा। अत: परमात्मा एक वृद्ध, अनुभवी तन में दिव्य-प्रवेश करते हैं और उसके द्वारा तुरंत ही ज्ञान-योग की शिक्षा

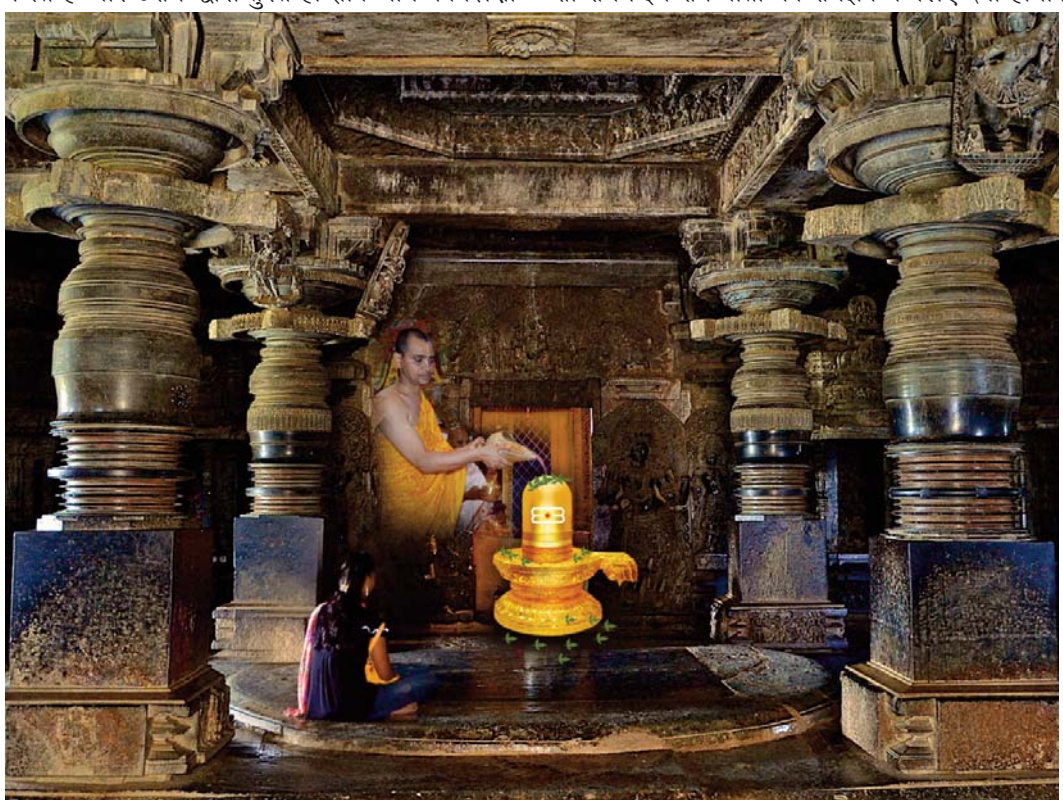

देने लगते हैं। वो तन प्रजापिता ब्रह्मा का होता है, जिसके आधार से परमात्मा का जन्म माना जाता है। यह जन्म अलौकिक है, दिव्य है, अत: इसे समझने के लिए हमें दिव्य बुद्धि की भी ज़रूरत है। चूंकि परमात्मा से सम्बन्धित ज्ञान के लिए थोड़े धैर्य की आवश्यकता है, इसलिए हम इस लेख के माध्यम से आपको सारी बातें विस्तार में नहीं बता सकते, इसके लिए आपको थोड़ा सा समय इन सब बातों को समझने के लिए देना होगा। शिवरात्रि हर बार आयेगी, लेकिन परमात्मा शिव कल्प में एक ही बार आते हैं, और वे आ चुके हैं। कब, क्यों, कैसे, उसे जानने हेतु आप समय अवश्य दें।

ऐसा विद्यालय हमने देखा नहीं कहीं- अण्णा हज़ारे

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की महिमा के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है, उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूँ। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये, वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इंसान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो, उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत इंसान बनाने का कार्य कर रहा है।

ऐसे होते हैं निराकार 'शिव' प्रकट

'मैं' हुआ ब्रह्मा के ललाट से प्रकट...

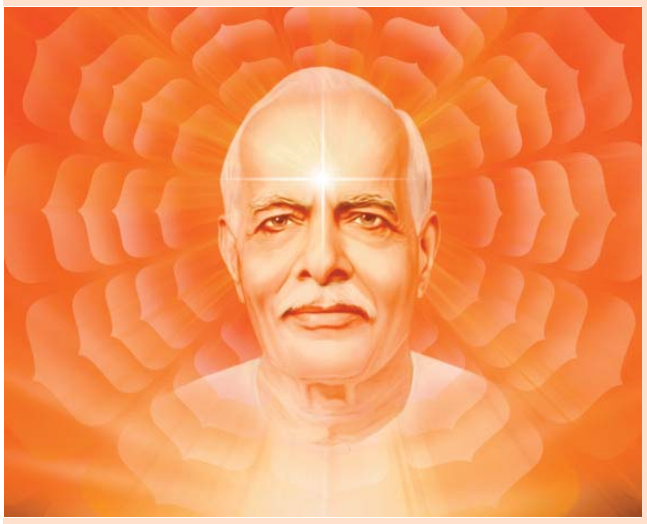

शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा - ''मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट होऊंगा।'' आगे लिखा है कि - ''इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम 'रूद्र' हुआ।''

शिव पुराण में यह भी लिखा है कि ''जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।'' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उस द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। इस पौराणिक उल्लेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुन: स्थापना की।

स्वयं गीता में भी लिखा है कि मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था। सोचने की बात है कि सृष्टि के आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? ब्रह्मा ही को तो 'आदिदेव' और शिव ही को स्वयंभू अथवा आदिनाथ कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय (सर्ग) ही यह ज्ञान दिया था तथा योग सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही यह ज्ञान दिया होगा। इसलिये ही भारत के प्राय: सभी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है। स्वयं महाभारत में भी लिखा है कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिये ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। परंतु चूंकि बाद में वैष्णवों ने महाभारत को वैष्णव ग्रन्थ बनाने के यत्न किये, इसलिये उन्होंने लिख दिया कि नारायण ने ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। परन्तु इसी श्लोक में जो 'प्रभुख्यय:' शब्द हैं, वे ही इस बात को सिद्ध करते हैं कि ज्योतिस्वरूप, अविनाशी

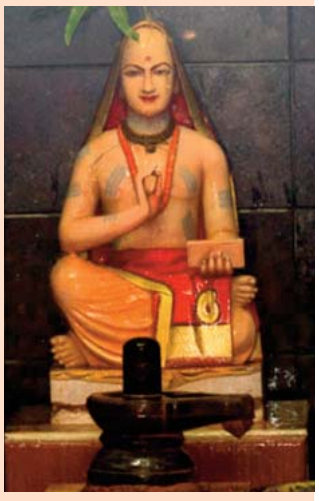

परमात्मा ही के प्रवेश होने के बारे में कहा गया है। नारायण तो स्वयं ही विवस्वान थे, अर्थात् सूर्यवंशी थे। गीता-ज्ञान जानने वालों में ब्रह्मा ही को भागवत् आदि ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तब अवश्य ही ब्रह्मा को परमात्मा ही ने यह ज्ञान दिया होगा और उसे माध्यम बनाकर अन्य आत्माओं को भी गीता-ज्ञान सुनाया होगा।

यादगार बने वे पल

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई स्थान है तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। **-डॉ. स्वामी केशवानंद सरस्वती,काशी।**

प्रेम का अद्भुत अनुभव

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारे लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं परमात्मा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड, सीनियर साइन्टिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर, नई दिल्ली**

इस ज्ञान के अलावा सब सारहीन

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़ीटिव संकल्पों की रचना होने लगी, मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस दुनिया का परि-वर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है। **-बी.डी. राठी, हाई कोर्ट जज,ग्वालियर।**